भारतीय राजनीति : हिंदी कहानी साहित्य के झरोखे से

डॉ0 नरेन्द्र

आधुनिक युग में राजनीति का प्रभाव यत्र–तत्र–सर्वत्र देख सकते हैं। छोटे बड़े सभी क्षेत्र राजनीति से प्रभावित हैं ।हिंदी कहानी साहित्य लगभग 2 वर्षों की अपनी यात्रा में भारतीय राजनीति में काफी उतार–चढ़ाव देख चुका है और यह केवल इसका भोक्ता याद्रष्टा ही नहीं है बल्कि सफल वक्ता भी बना है ।हिंदी कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था का जीवंत चित्रण किया है ।जिस समय हिंदी साहित्य में कहानी विधा का पदार्पण हुआ उस समय भारत गुलामी की चक्की में पिस रहा था और अंग्रेजों की राजनीतिक चाल थी फूट अथवा विभाजन के आधार पर अपनी जड़ें जमाना, वहीं दूसरी और भारतीय जनता संघर्षरत थी अंग्रेजों की जमी हुई राजनीतिक जड़ों को उखाड़ने में ।इसके लिए देश में बड़े–बड़े आंदोलन, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार,विरोध– प्रदर्शन आदि हो रहे थे। इन सब बातों से तत्कालीन कहानी– साहित्य अछूता नहीं रहा ।सुदर्शन, मुंशी प्रेमचंद, अमृतराय, पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, भगवती चरण वर्मा आदि अनेक कहानीकारों ने तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था का जीवंत चित्रण किया है ।इस समय राजनीति जनसामान्य के बीच बहुत व्यापक नहीं थी ।राजनीति में निति अधिक कूटनीति कम थी। भारतीय राजनीतिक संघर्ष का महत्वपूर्ण लक्ष्य भावी राष्ट्र के मंगल स्वप्न की कल्पनाओं से मंडित था। प्रेमचंद की कहानी **'लाल फीता'** में ऐसी ही स्थिति का चित्रण हुआ है। किंतु इस युग में एक और विडंबना ने जन्म ले लिया था– एक ही परिवार में दो विरोधी पनपने लगे थे। एक पक्ष जहां सरकारी मुलाजिम होने के कारण राष्ट्रीय आंदोलनों के बहिष्कार आदि का विरोधी था तो दूसरी ओर उसी परिवार का दूसरा पक्ष इसका हिमायती। बेचन शर्मा उग्र की कहानी **'उसकी मां'** में कहानी के नायक लाल और उसके सरकारी कर्मचारी चाचा के बीच इसी प्रकार का टकराव दिखाई देता है। लाल कहता है, '' इस पराधीनता के विवाद में मैं और आप दो भिन्न–भिन्न सिरों पर हैं आप कट्टर राजभक्त मैं कट राजद्रोही।''1 और यह विरोध दोनों को अपने–अपने पथ पर अड़े रहने के लिए बाध्य करता है । तत्कालीन समाज में ऐसे लोगों की भी कोई कमी नहीं थी जो न ही राजभक्त थे और न ही राजद्रोही थे वे केवल लक्ष्मी भक्त थे ।राजनीति में उनकी रुचि अपने हित तक ही सीमित थी। प्रेमचंद की कहानी **'ब्रह्म का सॉन्ग'**और**'आदर्श विरोध'** में समाज की राजनीतिक स्थिति और शिक्षित भारतीयों का आचार और दृष्टिकोण व्यक्त हुआ है। शोषित एवं सरकारी दमन की सताई गुलाम जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि अपने लच्छेदार भाषणों से जनता के विश्वास पात्र बनते हैं और असेंबलियों में पहुंचकर सरकार के कृपा पात्र बने रहने के लिए सभी स्याह– सफेद प्रयत्न करते हैं। दोनों पक्षों से लाभ उठाना ही उनका उद्देश्य था। सन 1947 में देश आजाद हुआ स्वातंत्र्योतर युग का शुभारम्भ एक धर्मनिरपेक्ष गणतंत्र, प्रभुता संपन्न संविधान के साथ हुआ। किंतु राजनीति में भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी जनता को गुमराह करने ,फूट डालो राज करो, आदि के जो बीज अंग्रेज हो गए थे उन्होंने कालांतर में इतना विकराल रुप धारण कर लिया कि भारतीय राजनीति पूरी तरह से इन की जकड़ में आ गई और आज हालात यह है कि हमारी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सभी नीतियां राजनीति से प्रभावित हैं। इतना ही नहीं बल्कि आज हमारे व्यक्तिगत संबंध भी राजनीति से अछूते नहीं है। अतः इस प्रकार चारों तरफ राजनीति का प्रभाव होने के कारण कहानीकारों की इस ओर दृष्टि जाना स्वाभाविक ही

है। यही कारण है कि हिंदी कहानी साहित्य में तत्कालीन राजनेताओं के भ्रष्ट चरित्र और काले कारनामों पर सबसे अधिक लिखा गया है।राजनीति में शरीफ आदमी का कोई स्थान नहीं है बल्कि जो जितना भ्रष्ट है ,चालाक है ,बदमाश है, बदनाम है उतना ही राजनीति में सफल है। आज के नेता रंगे सियार की तरह जनता को गुमराह करने वाले पथभ्रष्टक हैं। महीप सिंह की कहानी 'एक गुंडे का समय बोध' में इसी रूप पर प्रकाश डाला गया है कि एक गुंडा भी अपने गुंडागर्दी के पेशे को किस प्रकार राजनीति में बदल देता है कहानी का नायक जग्गू गुंडा कहता है,''पहले हमार पेसा बहुत सीधा–साधा रहे अब पता नहीं लगत की ससुर कौन गुंडा है और कौन शरीफ'' ।2 लेखक कहता है कि''जग्गू की परेशानी बड़ी अजीब थी शराफत का रूप धरे एक नई किस्म की गुंडई सभी और पनप रही है परंतु गुंडई का रूप धरे शराफत के पनपने कीकहां संभावना है ।''3आज की राजनीति में गुंडयी गुंडागर्दी से भी ज्यादा हावी है क्योंकि गुण्डों का भी एक आर्दश होता है किंतु आज के नेताओं का तो कोई आदर्श ही नहीं है ।पेशेवर गुंडा कम से कम अपने गुरु और अपने परिवार से तो कभी धोखा नहीं करता किंतु राजनीति में ऐसा कुछ नहीं है ।यहां तो हर चेहरा अवसर आने पर अपने गुरु का गुरु बन बैठता है और कुर्सी हथियाने के लिए अपने सगे–संबंधियों तक की बलि देने में हिचकिचाहट नहीं करता ।माहेश्वर की कहानी '**शुरुआत**' वैजनाथ सिंहल की कहानी '**सीढ़ियां गोल जीनेकी**' में ऐसी ही स्थितियों को दर्शाया गया है '**सिढियाँ गाोल ज़ीने की**'कहानी की नायिका स्वीकार करती है कि उसने राजनीति में सफलता पाने के लिए अपने पति की हत्या करवा दी।''.... मतलब साफ है यदि आप मेरे पति होते तो उन हालात में मैं आप की भी हत्या करवा देती, और बिना कुछ कहे वह प्रश्न को समझ गई थी और बोले जा रही थी जिस गति से मैं राजनीति के गोल ज़ीने की सीढ़ियां चढ़ रही थी उसमें किसी भी प्रकार की बाधा सहन हो ही नहीं सकती थी क्योंकि इस ज़ीने की प्रत्येक सिढी पर मेरे लिए हमसफ़र बदलना और नए समीकरण करना वक्त की जरूरत थी ।मेरे पूरे प्रशिक्षण में पति नाम का जीव मात्र दिखावे का कवच रहा है। उससे अधिक कुछ नहीं''4 इस प्रकार कहानीकारों ने नेताओं के घिनौने रूप का पर्दाफाश किया है

आज की राजनीति वोट बैंक में उलझ कर रह गई है ।इस वोट बैंक की राजनीति के लिए नेता लोग न जाने क्या–क्या छल–प्रपंच रचते हुए दिखाई देते हैं। चुनावी दौर में जनता को बेवकूफ बनाकर वोट हथियाने की राजनेताओं की पैंतरेबाजियाँ कहानीकारों की पैनी नज़र से बच नहीं पाई हं। कृष्णा पटेल की 'हवा में तैरती आवाज– कमला चमोला की दाँवभगवानदास मोरवाल की 'बियावान' तारा पंचाल की 'गिरा हुआ वोट' आदि कहानियां इसी प्रकार के दस्तावेज हैं। 'दांव' कहानी का नेता मजदूरों के वोट हथियाने के लिए मजदूर कन्या से अपने बेटे की शादी का ऐलान करता है,''उन्होंने कोई चूक नहीं की थी गोट भी उनकी बिसात में थी और पांसा भी उनके पक्ष में था।''5

गरीब जनता की सुध लेने वाले रंगे सियार नेता चुनाव के समय भोली–भाली जनता से झूठे वादे करके उनके वोटों को खरीदने,उन्हें डराने धमकाने आदि हर हथकंडे को अपनाने से गुरेज़ नहीं करते। चुनावों में रिश्वत और शराब का बोल–बाला रहता है ।हरेराम समीप ने 'खीर' कहानी में खीर के पैकेट के प्रतीक के रूप में रिश्वत की राजनीति का भंडाफोड़ किया है ,''सुबह से शाम तक राजेश ने जीप से पहुंचकर विपक्ष के गढ़ में पैकेट बांटे।यह चुनाव प्रचार की आख़िरी शाम थी। कहीं कोई घर नहीं छोड़ा गया ।विपक्ष के

कार्यकर्ता मजाक करते रहे, हंसते रहे। तमाशा कहते रहे... और लोगों में अचानक चुप्पी छा गई... और राजेश भारी बहुमत से विजयी हुआ।''6

आज के प्रशासन तंत्र पर राजनीति पूर्णता हावी हो गई है। हर क्षेत्र में नियुक्ति के लिए राजनीतिक सिफारिशों का होना जरूरी है। प्रांतीय सेवाओं में हर पद की नियुक्ति योग्यता के आधार पर नहीं बल्कि राजनीतिक इशारे और चांदी के जूते के सहयोग से होती है ।अतः जो लोग थैली भेंट कर पद प्राप्त करते हैं वह जल्दी ही इन रूपयों को सूद सहित वसूलने के चक्कर में लग जाते हैं। अफ़सरों की घूस लेकर, कभी शराब, तो कभी काम– वासना की पूर्ति के लिए रूपसी सुंदरी के अंक शयन के बदले कार्य करने की प्रवृत्ति की अनेक कहानियां बखिया उधेड़ती हैं।गौरीशंकर राजहंस की 'मुखौटे', सुरेश सेठ की 'धंधा,' विष्णु प्रभाकर की 'धरती अब भी घूम रही है' व'ठेका', हबीब कैफी की मजमेबाज़ आदि कहानियां राजनीति के ऐसे ही विकृत रूप को व्यक्त करती हैं। हबीब कैफी ने 'मजमेंबाज' कहानी में भ्रष्टाचार के इस रूप को रेखांकित करते हुए कहा है कि ''गाढ़ी कमाई पेट्रोल के रूप में व्यक्तिगत कामों में फुँकती है ।''7 न्याय व्यवस्था पर हावी राजनीति न्यायालय के निर्णयों में किस प्रकार देरऔर अंधेर करवाती है इसकी भी तत्कालीन कहानीकारों ने अच्छी खबर ली है। प्रसिद्ध कहानीकार संजीव की कहानी 'अपराध' में रूचि के पापा का यह कथन इस संदर्भ में विशेष उल्लेखनीय है,''बेटे हम जिसे न्याय कहते हैं वह तथ्य सापेक्ष है सत्य सापेक्ष नहीं है। तथ्य का प्रमाण स्वयं में सामर्थ्य सापेक्ष है। अतः निर्णय लचीला है यानि न्याय वह तरल पदार्थ है जिसे जिस पात्र में डाल दे वैसा ही ढल जाएगा।''8 इसके अतिरिक्त पुलिस विभाग में भ्रष्टाचार पर भी ढेरों कहानियां लिखी गई हं। धीरेंद्र अस्थाना की 'सूरज लापता है' श्रीलाल शुक्ल के 'दंगा' सतीश जमाली की'दुख दर्द' राकेश वत्स की 'अंतिम प्रजापति' आदि कहानियां पुलिस अफसरों की कार्य पद्धति व भोली जनता पर अत्याचार आदि विभिन्न रूपों को प्रस्तुत करती हैं। लोकतंत्रात्मक राज्य में यद्यपि मीडिया को चतुर्थ स्तंभ के रूप में जाना जाता है और उसे पूर्ण स्वतंत्रता होती है कि वह जनता की भलाई के लिए सभी ख़बरों को जनता तक पहुंचाएं, चाहे वह सरकारी तंत्र के विरुद्ध ही क्यों न हों किंतु स्थिति बिल्कुल इसके विपरीत है ।आधुनिक युग में मीडिया राजनीति के चंगुल में इस प्रकार फंसी हुई है कि वह चाहकर भी सच्ची खबरें जनता तक नहीं पहुंचा पाती।यदि कोई पत्रकार ऐसा दुस्साहस करता भी है तो राजनेताओं के कोप से उसे कोई नहीं बचा सकता । कहानीकारों ने मीडिया की इस त्रासदी और राजनेताओं की तानाशाही का खुलासा किया है।बैजनाथ सिंहल द्वारा रचित 'कांच घर की मछलियां' कहानी का पात्र सुकांत एक ईमानदार और निडर पत्रकार है किंतु राजनेता के कोप का भाजन कर अपनी जिंदगी से हाथ धो बैठता है। कहानी का पात्र रमण सत्य पर प्रकाश डालते हुए कहता है,''सुकान्त जर्नलिस्ट थे। सत्येन के कुकर्मों का पर्दाफाश करने आए थे। लेकिन व सत्येनयानी मंत्री के बेटे की काली करतूतों का पर्दाफाश कभी नहीं कर पाए और उनकी हत्या करवा दी गई''9 इस प्रकार मीडिया पर नेताशाही छाई हुई है। नेता लोग जो छपवाना चाहतें हैं बहुत से पत्रकार वही छापते हैं नहीं तो जान से जाते हैं ।इस सत्य का कहानी साहित्य में खुलासा हुआ है। आज मीडिया की छवि इतनी धूमिल हो चुकी है कि वह समाज के सामने सच्ची तस्वीर नहीं बल्कि खबरों को तोड़ मरोड़ कर पेश करती है, जिससे जनमा गुमराह होती है। जैसा कि तारापांचाल की कहानी'गिरा हुआ वोट' में दर्शाया गया है ।कहानी में नेता लाला हरप्रसाद के लोग धुलिया को ऊपर उठा कर फोटो खिंचवाते हैं ।वे उसे अपने नेता के पक्ष में वोट डलवाने के लिए स्वार्थवश

उठाए हुए हैं, किंतु पत्रकार पेश करते हैं उन्हें समाज सेवक के रूप में।'' बाबा यह फोटो अख़बार के बिल्कुल ऊपर छपेगा जिससे संदेश जाएगा कि हमारे देश के लोग गणतंत्र की इतनी कदर करते हैं कि लाचार होते हुए भी इस त्योहार में हिस्सा लेने आते हैं।'' 10

अतः कहानियों के माध्यम से कहानीकारों ने वर्तमान राजनीति की न केवल वास्तिविक तस्वीर पाठक के सामने रखी है बल्कि उसे सावधान भी किया है। उन्होंने इस सत्य को भी दर्शाया गया है कि आधुनिक युग में गणतंत्र का चतुर्थ स्तंभ कहे जाने कही जाने वाली मीडिया राजनीति के हाथों की कठपुतली बन गई है और वह उसी प्रकार नाचती है जिस प्रकार नेता उसे नचाना चाहते हैं। कहानी साहित्य ने इतनी लम्बी यात्रा में देश में हो रहे राजनीतिक परिवर्तन और प्रशासन तंत्र में राजनीति के बढ़ते दबाव, देश में बदलती परिस्थितियों, राजनीति से प्रभावित जन–जीवन, भ्रष्टाचार आदि को व्यक्त करने में सफलता प्राप्त की है। अतः यदि यह कहा जाए कि हिंदी कहानी के झरोखे से भारतीय राजनीति के सभी रुपों का अवलोकन करें तो वर्तमान राजनीति का हर कोना पाठक के सामने स्पष्ट हो जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1 संपादक नंददुलारे वाजपेयी, हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कहानियां, पृष्ठ संख्या– 110
2 महीप सिंह, कितने संबंध,'एक गुंडे का समय बोध' पृष्ठ संख्या– 76
3 महीप सिंह कितने संबंध पृष्ठ संख्या 76
4 बैजनाथ सिंघल, सीढ़ियां गोल ज़ीने की, पृष्ठ संख्या 23–24
5 कमला चमोला, शिकारगाह, पृष्ठ संख्यां– 396
6 हरेराम समीप, समय से पहले पृष्ठ संख्या– 39
7 हबीब कैफी मजमेबाज़, सारिका,(अंक–नवंबर 1974)
8 संजीव तीस साल का सफ़रनामा,T पृष्ठ संख्या– 20
9 डॉक्टर बैजनाथ सिंघल ,जब फ्राइड रो दिया, पृष्ठ 98
10 तारा पांचाल गिरा हुआ वोट,पृष्ठ संख्या–48

डॉ0 नरेन्द्र
मकान न0234/20 आजाद नगर,
कन्हेली रोड– रोहतक